International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 11, November 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

महात्मा गांधीजी का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक दर्शन का अध्ययन

PRADEEP KUMAR
RESEARCH SCHOLAR, SUNRISE UNIVERSITY, ALWAR RAJASTHAN

DR. NEERAJ TIWARI
RESEARCH SUPERVISOR, SUNRISE UNIVERSITY, ALWAR RAJASTHAN

सारांश

महात्मा गांधी शिक्षा के उद्देश्यों की अपनी दृष्टि में एक यथार्थवादी शिक्षा वद्, प्रयोगवादी और आदर्शवादी दार्शनिक थे। अपने शैक्षिक प्रयोगों में, उन्होंने देश में एक आदर्श समाज की स्थापना और विकास की प्राप्ति में अपने जीवन दर्शन को बदलने की कोशिश की। वे सत्य और अहिंसा पर आधारित एक नए समाज का निर्माण करना चाहते थे। बुनियादी शिक्षा के रूप में उन्होंने जिस योजना की सिफारिश की, वह शिक्षा के लिए एक नए साहस और दृष्टिकोण के लिए है। गांधी ने मौजूदा व्यवस्था में सुधार के प्रयास में शिक्षा का एक नया और व्यापक तरीका पेश किया। उनके सुझाव समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए सहायक हैं, और सरकार पर कम बोझ के साथ देश में प्रारंभिक शिक्षा के तेजी से विकास और विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। गांधीवादी शिक्षा योजना के मूल सिद्धांत भारत में समकालीन शिक्षा प्रणाली के सिद्धांतों को निर्देशित करने में महत्वपूर्ण हैं। महात्मा गांधी शिक्षा के उद्देश्यों की अपनी दृष्टि में एक यथार्थवादी शिक्षा वद्, प्रयोगवादी और आदर्शवादी दार्शनिक थे। अपने शैक्षिक प्रयोगों में, उन्होंने देश में एक आदर्श समाज की स्थापना और विकास की प्राप्ति में अपने जीवन दर्शन को बदलने की कोशिश की। वे सत्य और अहिंसा पर आधारित एक नए समाज का निर्माण करना चाहते थे। बुनियादी शिक्षा के रूप में उन्होंने जिस योजना की सिफारिश की, वह शिक्षा के लिए एक नए साहस और दृष्टिकोण के लिए है। गांधी ने मौजूदा व्यवस्था में सुधार के प्रयास में शिक्षा का एक नया और व्यापक तरीका पेश किया। उनके सुझाव समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए सहायक हैं, और सरकार पर कम बोझ के साथ देश में प्रारंभिक

शक्षा के तेजी से वकास और वकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। गांधीवादी शक्षा योजना के मूल सद्धांत भारत में समकालीन शक्षा प्रणाली के सद्धांतों को निर्दे शत करने में महत्वपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द- महात्मा गांधीजी, वर्तमान शक्षा प्रणाली, शै क्षक दर्शन, भारतीय शक्षा प्रणाली, शै क्षक प्रयोग, आदर्श समाज

प्रस्तावना

महात्मा गांधीजी दुनिया के 20वीं सदी के नि र्ववाद भ वष्यवक्ता हैं, जो सभी उत्पी ड़त और निराश और निराश लोगों के लए बहुत चंता करते हैं, जिसने उन्हें अपनी मातृभू म के माध्यम से उनकी सेवा करने के लए प्रतिबद्ध कया। इन वचारों और गति व धयों ने स्वतंत्रता के लए भारतीय आंदोलन को एक ऐसी पद्धति और सामग्री प्रदान की जो स्थानीय भारतीय संदर्भ से परे है। वशेष रूप से अहिंसक प्रतिरोध की रणनीति का उनका चुनाव अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य और प्रेरणा का एक सतत स्रोत है।

स्वयं गांधी के लए, हालां क ये नए भारत के निर्माण के लए एक आध्यात्मिक आंदोलन का केवल एक हिस्सा थे, निश्चित रूप से आवश्यक थे। उनका तात्का लक कार्य भारत को वदेशी जुए से मुक्त करना और इस प्रकार अपने रचनात्मक प्रोग्रामरों के कार्यान्वयन के माध्यम से प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा करना था। उन्होंने अपने क्षेत्र में चुने हुए वशेषज्ञों द्वारा संचा लत होने के लए कई संस्थान शुरू कए और उन्हें हर आंख से आंसू पोंछते हुए बारहमासी संदेश दिया।

गांधीजी तीसरी दुनिया के महान दार्शनिक, शक्षा वद् और प्रयोगकर्ता थे जिन्होंने वैश्विक समुदाय में एक स्थान दिया। वह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की उपज हैं। उन्होंने एक प्राच्य समाज को समझने की पूरी

को शश की। गांधीजी ने राजनीतिक सद्धांत के स्थान पर एक समग्र व्यक्तित्व की छ व बनाने का प्रयास कया।

गांधी के वचारों को योजनाबद्ध तरीके से पुनर्परिभा षत करना कठिन कार्य है। गांधीजी के वचार तीन आयामी एक व्यक्ति, सामाजिक और पारिस्थितिक आयाम एक पूरे में एकीकृत हैं। वह जमीनी स्तर पर लोगों को शक्ति प्रदान करके सर्वोदय समाज की स्थापना करना चाहते थे।

नए समाज की खोज या नई सामाजिक व्यवस्था के लए संघर्ष कोई नई परिघटना नहीं है। मानव ने पृथ्वी पर एक आदर्श समाज की स्थापना के लए तत्परता दिखाई है, और इसके लए उन्होंने पूरे युग में ईमानदारी से काम कया है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत में एक नए समाज के लए कड़ा संघर्ष कया। इसे भुलाया या अनदेखा नहीं कया जा सकता है। गांधी का न केवल इसमें है क वे राष्ट्र पता और हमारे मुक्ति संग्राम के नेता हैं, बल्कि इसमें भी उन्होंने एक क्रांतिकारी दर्शन की कल्पना की, जिसे बाद में सर्वोदय के रूप में व र्णत कया गया। सर्वोदय अ भन्न के लए एक नए समाज की तस्वीर है मुक्ति और सभी मनुष्यों का कल्याण।

सर्वोदय के माध्यम से गांधी ने भारत की आध्यात्मिक वरासत को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कया, जो गांवों में फली-फूली थी और इसका उपयोग राष्ट्र के निर्माण में कया। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की आलोचना इस लए नहीं की क वह पूरी तरह भ्रष्ट थी, बल्कि इस लए क वह भारत की आवश्यकताओं के वपरीत थी। पाश्चात्य मूल्यों में उन्होंने सुख-सु वधाओं, चाहतों की बहुलता और आत्मसंतुष्टता को देखा, जो लालच की ओर ले जा सकता था, मजबूत और सामाजिक वषमता द्वारा कमजोरों का संघर्ष दमन गांधी को वश्वास था क सत्ता का वकेंद्रीकरण न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज की कुंजी है। आ र्थक स्तर पर सत्ता के वकेंद्रीकरण का अर्थ था बड़े उद्योगों की खोज करना और ग्रामीण कुटीर उद्योग को

प्रोत्साहित करना। "छोटा सुंदर है" इस प्रकार आ र्थक नारा बन जाएगा। सामाजिक स्तर पर, हरिजनों, आदिवा सयों और निचली जातियों के सदस्यों को समानता के सभी अ धकार दिए जाएंगे।

सर्वोदय शक्षा प्रणाली में सामाजिक असमानताओं और अन्याय के उन्मूलन के लए नैतिक शक्षा महत्वपूर्ण भू मका निभाती है। सुधारों के माध्यम से गांधी ने बड़े पैमाने पर लोगों की नैतिक और सांस्कृतिक शक्षा हा सल करने की को शश की। यह सर्वोदय आदर्श की प्राप्ति की तैयारी थी। उनका मानव हृदय की अच्छाई और मानव स्वभाव की समानता में दृढ़ वश्वास था। तदनुसार सभी सामाजिक, आ र्थक और धा र्मक संस्थाओं के मौ लक और शु द्धकरण को ढकने वाली मनोवैज्ञानिक और सामाजिक बाधाओं की छंटाई के साथ-साथ व्यक्ति के जीवन में नई क्रांतिकारी आदतों का निर्माण गांधी के लए एक प्रमुख आवश्यकता बन गया। इस उद्देश्य से उन्होंने इन क्षेत्रों में सुधारात्मक वचारों के प्रचार के साथ-साथ नई तालीम की अपनी क्रांतिकारी अवधारणा को आगे बढ़ाया। इसे हिमजीवन- शक्षा- या बुनियादी शक्षा कहा जाता था।

भारत में प्रच लत शक्षा प्रणाली मैकाले की अवधारणा पर आधारित थी। यदि असंख्य भारतीय गाँवों को अपना सर उठाना है और न केवल ब्रिटिश शासन से मुक्त होना है बल्कि खतरनाक यूरोपीय सभ्यता का निर्माण करना है, तो उन्हें एक अलग रास्ता अपनाना चाहिए। नई आदतें बनानी हैं शक्षा को जीने के साथ-साथ चलना चाहिए। एक शल्प के इर्द- गर्द बुनियादी शक्षा केन्द्रित कए बिना जीना खाली है। 1937 में गांधी ने शक्षा को आमंत्रित कया। शक्षा वदों ने शक्षा का समर्थन करने वाले सैफ के उनके वचार पर हमला कया। यह बच्चों पर भारी बोझ होगा, उन्होंने सोचा, जायरे हुसैन कमेटी ने आत्म समर्थन पर कम जोर देते हुए रिपोर्ट तैयार की। योजना ने प्राथ मक वद्यालयों में अपना काम करना शुरू कर दिया। ले कन गांधी अपनी योजना को निष्पक्ष परीक्षण देने के लए बहुत कम समय दे सके, प्राथ मक वद्यालय

में बुनियादी शक्षा के रूप में कांग्रेस सरकार ने जो स्वीकार कया, उसे सर्वोदय नेताओं द्वारा सबसे असंतोषजनक माना जाता है।

"एक महापुरूष की तरह वह इतिहास की आधी सदी के बीच में खड़ा है, शरीर का नहीं बल्कि मन की आत्मा पोप का एक महापुरूष।"1

गांधी प्यार और सच्चाई के समय सम्मानित मूल्यों के आधार पर एक नई मानव सभ्यता का निर्माण करना चाहते थे। उन्होंने औद्योगीकरण पर आधारित आधुनिक सभ्यता के खतरों और खतरों को स्पष्ट रूप से देखा। यह भौतिक प्रचुरता लाने में सक्षम था, ले कन इसके ध्यान का केंद्र मानव जीवन नहीं बल्कि मशीन की दक्षता और सफलता थी। उन्होंने चुनौती को स्वीकार कया और मनुष्य को मानव संसार की चंता बनाने के लए कड़ी मेहनत की। उन्होंने मानवीय गरिमा और स्वतंत्रता के मूल्यों को सामने रखा, आराम और सुख योग्यता के योग्य नहीं थे। दुनिया भर के प्रतिष्ठित पुरुष धर्म और जाति के बावजूद उनके वीरता की ओर आक र्षत थे

एक उपन्यास रूप का संघर्ष। उनके नेतृत्व में जनता निडर हो गई और अपनी ताकत के प्रति जागरूक हो गई।

दार्शनिक और सांस्कृतिक दोनों तरह की भारत की परंपराओं में गहराई से निहित, गांधी ने भारतीय प्रतिभा का प्रतिनि धत्व कया।

जॉन पॉल II स्वीकार करता है: "वह भारतीय लोगों के उच्चतम गुणों और मूल्यों के प्रतीक के रूप में खड़ा है, और दुनिया के हर देश में उसकी प्रशंसा की जाती है"।2

गांधी अपने वचारों और वचारों और आदर्शों के माध्यम से जीते हैं, जो हमें सर्वोदय की उनकी दृष्टि को साकार करने के लए नया कदम उठाने के लए प्रेरित और चुनौती देते हैं।

बेनुधर परम ने गांधी के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए कहा है: "जब गांधी ने सर्वोदय के कारण का समर्थन कया तो उनके सामने न केवल सभी के कल्याण का उद्देश्य था। बल्कि समाज में सभी व्यक्तियों का सर्वांगीण कल्याण भी है, जिसमें नैतिक और आध्यात्मिक वकास के साथ-साथ भौतिक वकास भी शा मल है।

सर्वोदय का गांधीवादी दर्शन- सभी का कल्याण भारत के प्राचीन शास्त्रों और परंपराओं पर आधारित है। सर्वोदय दो शब्दों से मलकर बना है- 'सर्बा' और 'उदय'। यह सभी के उत्थान अर्थ को दर्शाता है। यह अर्थ भी देता है - सबका भला, सबकी सेवा, सबका कल्याण; आदि। सर्वोदय (देवनागरी: loksZn; गुजराती: loksZ/;) एक शब्द है जिसका अर्थ है 'सार्वभौ मक उत्थान' या 'सभी की प्रगति'।

इसका संबंध गांधी समाजवाद से है। इसका उद्देश्य सभी का सामाजिक-आ थक वकास है। दर्शन का आधार सामान्यता है, अर्थात जो कसी व्यक्ति वशेष या समूह के लए नहीं बल्कि सभी के लए कया जाता है। इसकी मुख्य समस्या अहंभाव और परोपकारिता की मांगों का समाधान करना है। सर्वोदय का मुख्य उद्देश्य समाज में नैतिक वातावरण का निर्माण करना है। सत्य, अहिंसा और प वत्रता सर्वोदय की नींव हैं। सर्वोदय और सत्याग्रह जैसी गांधी अवधारणा गीता या उपनिषदों के उत्पाद हैं। गांधीजी गीता के सच्चे भक्त थे।

सर्वोदय समाज की सामाजिक-आ र्थक बुराइयों की रोकथाम के लए एक मजबूत वचारधारा है। यह 'अद्वैतवेदांतो' सद्धांत पर आधारित है। यह समाज में उच्च नैतिक चरित्र बनाने के लए खड़ा है। यह सत्य, अहिंसा, आत्मत्याग और प वत्रता आदि से ही संभव है।

इसका उद्देश्य दूसरों के लए आत्म ब लदान करना, एक दूसरे को लेना और देना है। यह सर्वोदय का सर्वोत्तम सद्धांत है। यह गांवों के वकास के लए महत्व रखता है। उसके लए सहायता देने में गाँव को प्राथ मकता दी जानी चाहिए। गाँव भारतीय लोकतंत्र की आधार शला हैं। ग्रामीणों के कल्याण के बारे में सोचना हर भारतीय का कर्तव्य है। सत्य और अहिंसा सर्वोदय के दो मुख्य बिंदु हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति इन दो सद्धांतों का पालन करेगा तो सामाजिक भ्रष्टाचार और अनिय मतताओं पर रोक लग सकेगी। यह एक राजनीतिक वचारधारा नहीं है बल्कि यह एक सामाजिक धा र्मक पंथ है। यह मानवीय चाहतों की आत्म-सीमा के लए खड़ा है। सर्वोदय राष्ट्रीय एकता और एकजुटता के लए खड़ा है। यह प्रांतवाद और क्षेत्रवाद की निंदा करता है।

गांधीजी के सर्वोदय की जड़ें अस्तित्व की आध्यात्मिक एकता और गीता की वेदांतिक अवधारणा में हैं। सर्वोदय के आदर्श बहुसंख्यकवाद की अवधारणा, वर्ग नस्लीय संघर्ष की अवधारणा और बड़ी संख्या के महानतम अच्छे के सद्धांत का वरोध करते हैं।

गांधीजी ने अपने अनुभव से 'सर्वोदय' के सद्धांत का निर्माण कया। वदेशों में पश्चिमी शक्षा प्राप्त करने से उन्हें पूँजीवाद के व भन्न पहलुओं को करीब से देखने का मौका मला। गांधी के आदर्शवाद की नैतिकता उनके सरोवोदय के दर्शन से गहरी हुई है। गांधी राज्य को हिंसा और बल का एक संगठन मानते थे क्यों क वह राज्य के दमनकारी चरित्र से पीछे हट गए थे।

सर्वोदय का संबंध गांधीजी के सामाजिक आदर्श और गांधी के शब्दों पर एक समुदाय के आदर्श से है। यह जाति वहीन और वर्ग वहीन समाज है। स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुत्व सर्वोदय के मूल अंग हैं। सर्वोदय का दर्शन राज्य के प्रति शत्रुतापूर्ण है। स्वराज के लए गाँधीजी के अनुसार सर्वोदय आवश्यक है। सर्वोदय में सत्ता की राजनीति के लए कोई स्थान नहीं है। यह सहकारिता की राजनीति का आधार है। सर्वोदय सबके सुख और उत्थान की अनुभूति है।

मुफ्त प्राथ मक शक्षा

गांधीजी ने 7 से 14 वर्ष के सभी लड़कों और लड़ कयों के लए मुफ्त और अनिवार्य शक्षा की वकालत की। प्राथ मक स्तर तक छात्र की मातृभाषा में शक्षा दी जानी चाहिए। गाँव के सभी बच्चों को निःशुल्क प्राथ मक सार्वभौ मक शक्षा प्रदान की जानी है। इससे देश की रीढ़ मजबूत होगी।

सीखते हुए कमाई इस शक्षा का आदर्श वाक्य था। इससे वद्या र्थयों में रचनात्मकता बढ़ेगी। जैसा क गांधी भारतीय गाँव को आत्मनिर्भर इकाइयाँ बनाना चाहते थे, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया क व्यावसायिक शक्षा से छात्रों के भीतर दक्षता में वृ द्ध होनी चाहिए जो गाँव को आत्मनिर्भर इकाई के रूप में बनाएगी।

व्यावसायिक शक्षा का स्थान

बच्चों के मन में शारीरिक कार्य के प्रति प्रेम का संचार होगा। यह कोई मजबूरी नहीं है बल्कि बच्चा इसे करके सीखेगा-मात्र कताबी ज्ञान से मुक्त होकर एक छात्र को शारीरिक श्रम का सहारा लेना चाहिए।

नैतिकता पर जोर

शक्षा से गांधी का मतलब एक छात्र के भीतर नैतिकता का सुधार था। वद्यार्थी को कताबी न होकर सत्य, अहिंसा, दान आदि जैसे कुछ नैतिक नैतिक नियमों को अपनाना चाहिए जिससे उसका चरित्र प्रका शत हो। इस प्रकार शक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण गांधी के लए एक प्रमुख सरोकार था।

राजनीति में गैर-भागीदारी

गांधीजी छात्रों को राजनीति से दूर रखना चाहते थे। यदि छात्र राजनीति में भाग लेंगे तो वे राजनेताओं के हाथों मोहरे बन जायेंगे जो उनका उपयोग अपनी इच्छा पूर्ति के लये करेंगे। इससे एक छात्र के वकास में बाधा आएगी और उसकी शक्षा को झटका लगेगा। इस लए उन्होंने छात्रों को राजनीति से पूरी तरह दूर रहने की सलाह दी।

महिला शक्षा

गाँधी स्त्री शक्षा के नायक थे। उन्होंने वकालत की क तीन समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच स्थिति की समानता में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। उन्होंने पर्दा प्रथा और वैधव्य का घोर वरोध कया। वह महिलाओं को सामाजिक गुलामी से मुक्त करना चाहते थे। इस लए, काउंटी के अंदर व भन्न शैक्ष णक संस्थानों में छात्राओं की संख्या में काफी वृ द्ध हुई। इस प्रकार, गांधी ने समाज के बहुत से सुधार के लए महिला शक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया।

शक्षा पर गांधीजी का वचार एक नया है। व्यावसायिक शक्षा का उनका वचार अद् वतीय था जिसे आज भी भारत सरकार द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है।

व्यक्ति के लए शक्षा

गांधी की शक्षा के लए सीखने वाले को जीवन के वास्त वक उद्देश्य के लए तैयार करने और निर्दे शत करने में मदद करनी चाहिए, जो क आत्मान का एहसास करना है। वह स्वयं जिसे वह ईश्वर को साकार करने के रूप में देखता है। आध्यात्मिक बोध या आत्म बोध जिसे गांधी जीवन के प्रमुख उद्देश्य के रूप में महत्व देते हैं। गांधीजी शक्षा के अनुसार शक्षार्थी या शक्षार्थी को आत्म-साक्षात्कार या मुक्ति (मोक्ष) के लए तैयार करना चाहिए। उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान-सा वद्या या वमुक्तय पर जोर दिया। (वह जो ज्ञान को मुक्त करता है)। अपने सामाजिक-राजनीतिक और शक्षा संबंधी वचारों में।

मुक्ति के संबंध में वचार - गांधी ने दो प्रकार की मुक्ति की बात की। मुक्ति का एक रूप वदेशी शासन से देश की स्वतंत्रता को सुर क्षत करना था। उसके लए कसमें स्कूल के स्वदेशी मॉडल का वकास, आ र्थक, शै क्षक वकास भी शा मल होगा? हालां क ऐसी स्वतंत्रता अल्पका लक साबित हो सकती है यदि सही परिप्रेक्ष्य में और अन्य प्रकार की मुक्ति (मोक्ष) के प्रकाश में न समझा जाए जो हमेशा के लए है। अद्वैत के रूप में वह पृथ्वी पर जन्म और मृत्यु के चक्र से, संसार की पीड़ा से मुक्ति का उल्लेख कर रहा है, और वह इस मुक्ति, मोक्ष को जीवन के अंतिम लक्ष्य के रूप में बल दे रहा है (चौथा पुरुषार्थों में से एक इस प्रकार अन्य तीन हैं) धरम) अर्थ, काम। यहां इस बात पर जोर देना जरूरी है क यह मुक्ति एक व्यक्तिगत मुक्ति है और यह कसी भी तरह से पृथ्वी-प्रकृति को नहीं बदलती है।

शक्षा का सामाजिक उद्देश्य

शक्षा एक ऐसा मामला नहीं है जो केवल व्यक्तियों से संबं धत है, बल्कि यह समाज, सामूहिकता से भी गहराई से संबं धत है। गांधी व्यक्ति और सामूहिक के बीच के अंतर-संबंध को पहचानते हैं और गहराई से महत्व देते हैं, जैसा क शक्षा के लक्ष्यों सहित शक्षा पर उनके वचारों में परिल क्षत होता है। पूरे स्था पत सर्वोदय समाज की बेहतरी के लए गांधी का प्रमुख योगदान। गांधी के सामाजिक चंतन और मनुष्य की

अवधारणा की कुंजी एक शब्द सर्वोदय में निहित है। सर्वोदय, सभी के उत्थान पर एक मजबूत जोर, निश्चित रूप से गांधी के शै क्षक दृष्टिकोण को एक बहुत स्पष्ट दिशा देता है। वह समाज के उत्पी ड़तों के उत्थान के लए, पूरे समुदाय के जै वक वकास और वकास और वकास के लए और राष्ट्र निर्माण के लए स्कूल और शक्षा के महत्व पर जोर देता है। एक व्यक्ति समाज के लए क्या कर सकता है, इस अर्थ में मनुष्य की सामाजिक भू मका पर यहाँ बल दिया गया है। साथ ही, गांधीजी के लए शक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के पूर्ण वकास और नए मनुष्य के वकास के माध्यम से मनुष्य को एक उच्च नैतिक और आध्यात्मिक क्रम में ऊपर उठाना है, एक सत्याग्रही जो सत्य को ग्रहण करता है। गांधीजी के लए शक्षा का लक्ष्य बनाने वाले इस प्रकार के व्यक्ति ने मानव जाति की सेवा करके, आत्मदान करके हा सल कया।

आध्यात्मिक वकास के लए शक्षा

शक्षा एक प्रकार की प्रणाली है और दूसरी ओर प्र क्रया है। शक्षा की एक प्रणाली के रूप में निश्चित और अच्छी तरह से परिभा षत घटकों की संरचना की जाती है, जिनमें से प्रत्येक प्रणाली के बेहतर वकास और सर्वांगीण वकास के लए वश्लेषण और अध्ययन करने के लए अतिसंवेदनशील है। एक प्र क्रया के रूप में शक्षा क्रयात्मक है, इसमें जीवन और गति है, इसमें एक दिशा में प्रगति होती है और यह स्थायी रूप से गतिशील रूप में रहती है। शक्षा की गतिशीलता एक महत्वपूर्ण कारक है क्यों क यह गतिशीलता ही शक्षा को बच्चों को जी वत और वचारशील प्राणी के रूप में व्यवहार करने में सक्षम बनाती है।

शक्षा लक्ष्य शक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक है। महात्मा गांधी द्वारा परिकल्पित और उनके द्वारा वकालत की गई शक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक और नैतिक व्यक्तित्व का निर्माण और वकास करना है जो समाज का एक स क्रय सदस्य है। वे कहते हैं, " शक्षा इस प्रकार आत्मा का जागरण है" शक्षा के बिना व्यक्ति की आत्मा को जगाने का प्रयास कए बिना और व्यक्ति में 'आंतरिक

आवाज' को वक सत और मजबूत कए बना, शक्षा का कोई गंभीर उद्देश्य नहीं है। गांधीवादी शक्षा अपने सभी पहलुओं में आध्यात्मिक सद्धांतों पर आधारित है। इस अर्थ में हम गांधीवादी आदर्शवाद की बात करेंगे; पूरी तरह से एक अलग चरित्र में वक सत करने के लए। यह सबसे ठोस और चरित्र आधारित नींव है जिससे हम सभी के आधार पर शक्षा का निर्माण करने के लए एक या एक से अ धक धर्मों से तैयार की गई अवधारणाओं और सद्धांतों को सामंजस्यपूर्ण छेद में वक सत कया गया है जिससे शक्षा के लक्ष्यों को ठीक से एकीकृत कया गया है। गांधीवादी मूल्यों की एकरूपता और शाश्वत आयाम उन्हें एक उच्च आध्यात्मिक आयाम प्रदान करते हैं। हम अक्सर गांधीवादी आध्यात्मिकता के बारे में बात करने में झझकते हैं क्यों क गांधी कसी भी तरह से खुद को कसी वशेष धा र्मक संप्रदाय से नहीं जोड़ते हैं, वे आध्यात्मिक जीवन के कसी भी तरीके से हैं। गांधीवादी आध्यात्मिकता क्या है, मन का एक संपूर्ण दृष्टिकोण जो प्रत्येक ववरण में सर्वोच्च ईश्वर, भगवान के लए नर्दे शत है। गांधीवादी शक्षा को इस आध्यात्मिकता से वच्छिन्न नहीं माना जा सकता। इसका मतलब कई चीजें होगा। शक्षा को पहले व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में सत्य के अभ्यास के लए पृष्ठभू म तैयार करनी चाहिए। एक प्र क्रया के रूप में शक्षा जीवन के वस्तृत अनुभव के संदर्भ में उसके लए आवश्यक वातावरण वक सत करती है जिसके एजेंट शक्षक, माता- पता और समुदाय हैं। इस स्तर पर सफलता इस बात पर निर्भर करती है क ये एजेंट व्यक्ति को सीखने की प्र क्रया में कतना प्रभा वत कर सकते हैं।

ज्ञान के लए शक्षा

शक्षा को मनुष्य में पूर्णता लाने की एक प्र क्रया के रूप में माना जाता है, शक्षा इन मनुष्यों और सामाजिक कार्यों को बच्चे की अंतःकरण की क्षमता और आवेगों को नर्दे शत, नर्दे शत और पुनर्व्यवस्थित करके, वकास की प्र क्रया में व्यक्ति की मदद करके, जो भीतर है उसे प्रकट करके करती है।

और उसे वयस्क जीवन की जिम्मेदारी संभालने के लए तैयार करना। ले कन शक्षा इन सभी को ज्ञान के शीर्षों में वर्गीकृत मानव जाति के कुल अनुभवों से परि चत कराती है। ऐतिहा सक रूप से कहा जाए तो शक्षा वशेष वषयों के तहत वर्गीकृत सूचनाओं की एक बड़ी व वधता के साथ व्यक्तियों की पहचान की एक प्र क्रया बन गई है। व्यक्ति को वर्गीकृत ज्ञान के संचार पर बहुत जोर दिया गया।

गांधी ने शक्षा को मनुष्य के समग्र वकास के संदर्भ में परिभा षत कया है। गांधी इस अवधारणा में मस्तिष्क के वकास को शक्षा का महत्व देते हैं। ज्ञान के प्रावधान द्वारा या बल्कि ज्ञान के वर्गीकृत शीर्षों के लए व्यक्ति को उजागर करके मन और सर की शक्षा को इसके व्यापक अर्थों में छोड़कर नहीं कया जा सकता है। गांधी इस बात से सहमत हैं क शक्षा को मानव जाति के अनुभव को प्रतिबिंबित करना चाहिए, और हमारे लए, भारतीयों की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता जो वक सत हुई थी। हमारी संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान उस शक्षा का एक मुख्य हिस्सा बन जाता है जो नई पीढ़ियों को प्रदान की जाती है। इस प्रकार शक्षा व्यक्ति के साथ देश की वरासत के प्रति प्रेम के कई मूल्य जुड़े होंगे। ज्ञान के लए शक्षा आगे चलकर व्यक्ति को उसके भौतिक और भौगो लक वातावरण से परि चत कराती है। शक्षा कसी भी तरह से शक्षार्थी को ज्ञान की एक प्रणाली से परि चत कराने की उपेक्षा नहीं कर सकती है जो शक्षार्थी के अपने परिवेश को शा मल करती है। ज्ञान की शक्षा को साहित्य भी कहा जाता है। इसमें भाषाओं और साहित्य का ज्ञान और कई अन्य कला-उन्मुख वषय शा मल होंगे।

सामाजिक वकास के लए शक्षा

गांधीवादी अर्थ में शक्षा का उद्देश्य समाज का वकास करना है। शक्षा का यह उद्देश्य मुख्य रूप से उस व्यक्ति पर एक बड़ी जिम्मेदारी जोड़ता है जिसे श क्षत कया जा रहा है और साथ ही उसकी शक्षा के बाद भी। समाज का वकास कोई स्वत: होने वाली चीज नहीं है; व्यक्ति को उस उद्देश्य के लए सेवा में लगाया

जाना है। इसके लए शक्षा के हिस्से के रूप में व्यक्ति के लए महान प्र शक्षण की आवश्यकता होती है जो उसे समाज के कल्याण के लए स्थायी आधार पर खुद को प्रतिबद्ध करने में सक्षम बनाता है। गांधी के शै क्षक वचार शक्षा के इस लक्ष्य को बहुत महत्व देते हैं। शक्षा के सभी पहलुओं में समाज सेवा और समाज कल्याण के मूल्य को महत्व देने के लए देश में छात्रों और शक्षा वदों को उनके भाषणों और लेखों में आम बात थी।

गांधीजी के लए, "व्यक्तिगत वकास और सामाजिक प्रगति अन्योन्या श्रत हैं"4. उनकी इच्छा थी क एक ऐसा समाज जिसमें सभी लोगों को अपने व्यक्तिगत चरित्र को खोए बिना संपूर्ण की बेहतरी के लए अपनी भू मका निभानी चाहिए। शक्षा का प्रत्येक लक्ष्य जिसकी परिकल्पना गांधी ने की थी, वास्तव में दूसरों के साथ सामंजस्य स्था पत करता था। उन्होंने अपने आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों के साथ चरित्र निर्माण की वकालत की। सामाजिक वकास के लए शक्षा का उद्देश्य इस प्रकार शक्षा में सामाजिक उन्मुख मूल्यों की संख्या पैदा करना है जो सामाजिक वातावरण से संबं धत है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को खुद को समायोजित करना होता है। स्कूलों और कॉलेजों में शक्षा छात्रों में समाज और इसकी वर्तमान जरूरतों के लए प्यार और स्नेह की भावना पैदा करने के लए अपने निपटान में सब कुछ करती है। व्यक्ति को हर समय एक स क्रय सदस्य के रूप में समाज की मदद करने के लए तैयार रहना चाहिए। जीवन के सभी सृजन के लए व्यक्ति को करुणा होनी चाहिए।

शक्षा के गांधीवादी मानदंड लोगों की सेवा के लए एक अ भ वन्यास बन गए। वह चाहते थे क शक्षा जमीनी स्तर पर लोगों की जरूरतों के अनुरूप हो। इस दृष्टिकोण से उन्होंने वर्तमान शक्षा में गंभीर क मयों का पता लगाया। गांधीवादी आरोप लगाते हैं क आज की शक्षा कसी भी तरह गांवों की गरीबी और समस्याओं तक नहीं पहुंचती है। यह नहीं के बीच एक जबरदस्त अंतर छोड़ देता है। यह शक्षा और

अ श क्षत के बीच एक जबरदस्त अंतर छोड़ देता है। अंग्रेजी जानने वालों और नहीं जानने वालों के बीच जो खाई पैदा हुई है वह गांधी के लए एक गंभीर मुद्दा था। फर से देश उच्च शक्षा के लए भारी मात्रा में निवेश करने के लए मजबूर है, जो भारत की आबादी के अ धक संपन्न वर्गों को ही लाभान्वित करता है। आज की शक्षा इस दृष्टिकोण से अ धक संभावनाओं की तलाश में गांवों को शहरों से अलग करती है। इन सभी को गांधी बड़ी चंता से देखते थे।

शक्षा और जीवन का अनुभव

गांधी जी ने भी जीवन के अनुभव को शक्षा का मुख्य उद्देश्य बनाया। सभी समान प्रमुख अंतर थे - डेवी का व्यावहारिक उपयो गता का मूल्य स्वयं एक अंत था, जब क गांधी के लए यह अ धक दूरस्थ छोरों का एक प्रमुख साधन था और परिणामस्वरूप अंतिम लक्ष्य तक ही था। गांधी ने गतिशील दृष्टिकोण से जीवन और उसके अनुभवों की परिकल्पना की और जीवन को उसकी संपूर्णता में देखने और उसका वश्लेषण करने का प्रयास कया। गांधी का व्यक्तित्व सभी राजनीतिक और अस्तित्वगत पहलुओं में ऐतिहा सक वास्त वकता के साथ प्रयोगों की श्रृंखला जैसे एक शल्पकार के लंबे जीवन के हर कदम पर एक मनट और ठोस परस्पर क्रया है। गांधी चीजों को मौके पर नहीं छोड़ना चाहते थे और दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को बहुत सावधानी और ध्यान से देखते थे। लुई फशर कहते हैं, "उन्होंने कार्रवाई के एक नए आयाम की खोज की; उन्होंने सामाजिक परमाणु को वभाजित कया और ऊर्जा का एक नया स्रोत खोज लया।

यह एक बड़ी उपलब्धि थी क्यों क इसने गांधी के जीवन और कर्म के दर्शन के वकास का आधार बनाया।

गांधीवादी अर्थों में जीवन-अनुभवों के लए शक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को उस व्यावहारिक जीवन के व भन्न पहलुओं को प्रस्तुत करना है जिसमें व्यक्ति से अपना जीवन बनाने की अपेक्षा की जाती है।

व्यक्ति ने स्वयं को कार्रवाई के आंतरिक रूप को जानने के अवसर प्रदान कए। जब तक इस पहलू को ध्यान में नहीं लाया जाता है, आमतौर पर शक्षा की शुरुआत से ही शक्षा इस अ धकार पर जोर नहीं देती है, व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण, तर्क और वश्लेषण करने में मदद करनी चाहिए क वह अपने और अपने चारों ओर देखता है। मूल रूप से यह एक ऐसी क्षमता है जो उसे अपने आसपास रहने वाले जानवरों से काफी अलग करती है। इस पहलू पर जोर देकर एक शक्षा व्यक्ति को मनुष्य के रूप में मनुष्य के लए कुछ उ चत करने में मदद कर रही है। वह अपने तर्कसंगत दिमाग को अपने आस-पास की हर चीज पर प्रयोग करने में सक्षम हो जाता है, चीजों को स्वीकार या अस्वीकार कर देता है और अनुभव करता है क जीवन सामान्य रूप से उसे प्रस्तुत करता है। इसका मतलब यह होगा क व्यक्ति अपने पूरे जीवन के दौरान हर कदम को महत्व देना सीखेगा। समय के बीच एक कड़ी स्था पत हो जाती है और एक स्वयं के लए उपलब्ध हो जाती है और जिम्मेदारी और कर्तव्यों की श्रृंखला को पूरा करने की उम्मीद की जाती है। गांधी के लए जीवन अनुभव स्वयं, समाज और ईश्वर की भलाई के लए व्यक्तिगत व्यक्तित्व को पूर्ण वक सत करने का प्राथ मक साधन है।

निष्कर्ष

 शक्षा पर गांधी के वचार उनके सामान्य दर्शन के गतिशील स्थल का निर्माण करते हैं। शक्षा का उनका दर्शन जीव वज्ञान, समाजशास्त्र, मनो वज्ञान और दर्शन पर आधारित है। गांधीजी की यह सर्वोच्च इच्छा थी क भारत का प्रत्येक व्यक्ति श क्षत हो, ले कन साक्षर से उनका तात्पर्य केवल पढ़ने- लखने का ज्ञान नहीं था। वे साक्षरता को शक्षा नहीं मानते थे। उन्होंने कहा। "साक्षरता न तो शक्षा का अंत है और न ही शुरुआत। यह केवल एक साधन है जिससे पुरुष और महिला को श क्षत कया जा सकता है। उनका मानना था क शक्षा को बच्चे की सभी क्षमताओं का वकास करना चाहिए ता क वह एक पूर्ण मानव बन सके

अर्थात बच्चे के शरीर, मन और दिल और आत्मा का पूर्ण वकास हो सके। . इस तरह गांधी ने वकालत की क शक्षा को बच्चे के व्यक्तित्व को पूरी तरह से और सामंजस्यपूर्ण रूप से वक सत करना चाहिए ता क वह जीवन के अंतिम लक्ष्य को महसूस कर सके, जो क सत्य या ईश्वर है। गांधीजी ने शक्षा की परिभाषा देते हुए कहा है क शक्षा से उनका तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वांगीण गुणों का सर्वांगीण वकास है। शक्षा का अर्थ बताते हुए महादेव देसाई ने लखा है क गांधीजी ने इस बात की वकालत की थी क शक्षा से बालक में सभी मानवीय गुणों का वकास होना चाहिए। उस शक्षा को अच्छा नहीं कहा जा सकता जो बच्चे को पूर्ण मानव और उपयोगी नागरिक नहीं बनाती। इस प्रकार शक्षा से गांधीजी का अर्थ पूर्ण या पूर्ण मनुष्य का निर्माण है। पूर्ण मनुष्य से अ भप्राय व्यक्तित्व के सभी चार पहलुओं- शरीर, हृदय, मन और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण वकास से है। इस लए गांधीजी के अनुसार सच्ची शक्षा वह है जो बच्चे की आध्यात्मिक, मान सक और शारीरिक क्षमताओं को अ भव्यक्त और प्रेरित करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- चिमनी, बी.एस. (2012)। स्व, आधुनिक सभ्यता और अंतर्राष्ट्रीय कानून: मोहनदास करमचंद गांधीजी के हिंद स्वराज या भारतीय गृह शासन से सीखना। यूरोपियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल लॉ, 23(4), 1159-1173।
- क्लेरहाउट, एस. (2014)। गांधीजी, कन्वर्जन एंड द इक्वेलिटी ऑफ रिलिजंस: मोर एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ। नुमेन, 61(1), 53-82।
- कॉक्स, पी. (2004)। गांधीजी का पुनर्मूल्यांकन: 'पर्यावरण' सक्रियतावाद में स्वराज और स्वदेशी। इको थियोलॉजी: जर्नल ऑफ रिलिजन, नेचर एंड द एनवायरनमेंट, 9(1)।
- धारेश्वर, वी. (2010)। राजनीति, अनुभव और संज्ञानात्मक दासता: गांधीजी का हिंद स्वराज। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 51-58।

- दास, डी. के. (2012)। समकालीन काल में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता। मानविकी और सामाजिक विज्ञान का एक जर्नल, 1(2), 311-313।
- दीवान, आर. (2001)। गांधीवादी अर्थशास्त्र: एक अनुभवजन्य परिप्रेक्ष्य। वर्ल्ड फ्यूचर्स, 56(3), 279-317।
- दोध, पी. (2012)। सामाजिक समावेश पर वैश्वीकरण के प्रभाव: गांधीवादी आर्थिक दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज, 2(5), 287-297।
- डगर, डब्ल्यू. एम. (1982)। गांधीवादी अर्थशास्त्र का एक आयरेशियन दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक इश्यूज, 16(2), 441-444।
- दत्ता, एस. (2018)। महात्मा गांधीजी के दर्शन का योगदान: और यह हमारे समाज के लिए प्रासंगिकता है। रिसर्च गुरु: ऑनलाइन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स (पीयर रिव्यू), 12(3), 967-975, गुजरात।
- गावस्कर, एम. (2009)। गांधीजी का हिंद स्वराज: आधुनिकता के समय में पवित्र को पुनः प्राप्त करना। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 14-18।
- गरई, आर. एजुकेशनल थॉट्स ऑफ गांधीजी। जर्नल होमपेज: www. ijrpr. कॉम आईएसएसएन, 2582, 7421, भोपाल।
- गोदरेज, एफ. (2006)। अहिंसा और गांधीजी की सच्चाई: नैतिक और राजनीतिक मध्यस्थता के लिए एक विधि। राजनीति की समीक्षा, 68(2), 287- 317।
- ग्रे, एस., और ह्यूजेस, टी.एम. (2015)। गांधीजी के भक्तिमय राजनीतिक विचार। फिलॉसफी ईस्ट एंड वेस्ट, 65(2), 375-400।